MASA-05

December - Examination 2025
M.A. (Final) Examination
SANSKRIT
गद्य तथा काव्य
Paper : MASA-05

[*Time: **3** Hours*] [*Maximum Marks: **80***]

निर्देश :– यह प्रश्नपत्र 'अ', 'ब' और 'स' तीन खण्डों में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड के निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खण्ड–'अ' **8×2=16**

(अति लघुउत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :– **सभी** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को प्रश्नानुसार एक शब्द, एक वाक्य या अधिकतम **30** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

1. (i) बाणभट्ट की 2 रचनाओं के नाम लिखिए।
   (ii) बाणभट्ट की किस रचना में पुनर्जन्म के सिद्धांत को स्वीकार किया गया है?
   (iii) 'शिशुपालवधम्' ग्रन्थ के रचनाकार कौन हैं?
   (iv) बृहत्त्रयी में परिगणित माघ की रचना का नाम बताइए।
   (v) 'विक्रमाङ्कदेवचरितम्' ग्रन्थ के प्रणेता कौन हैं?
   (vi) आचार्य पुष्पदन्त विरचित स्तोत्र का नाम बताइए।
   (vii) 'कुमारसम्भवं' में कुमार नाम से कौन अभिहित है?
   (viii) पार्वती के पिता का नाम बताइए।

खण्ड–'ब' **4×8=32**

(लघुउत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :– **किन्हीं चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम **200** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

2. निम्नलिखित गद्यांश का सप्रसंग अनुवाद कीजिए –

आलोक्य च सा दूरस्थितैव प्रचलित रत्नवलयेन रक्त–कुवलयदल–कोमलेन पाणिना जर्जरितमुखभागां वेणुलतामादाय नरपतिप्रतिबोधनार्थं सकृत् सभाकुट्टिममाजघान, येन सकलमेव तद् राजकम् एकपदे वनकरियूथमिव तालशब्देन तेन युगपदावलितवदनमवनिपालमुखादाकृष्य चक्षुस्तदभिमुखमासीत्।

अथवा

आपीत सलिलश्च सेनापतिस्ता मृणालिकाः शशिकला इव सैंहिकेयः क्रमेणादशत्। अपगतश्रमश्चोत्थाय परिपीताम्भसा सकलेन तेन शबरसैन्येनानुगम्यमानः शनैः शनैः अभिमतं दिगन्तरमयासीत्। एकतमस्तु जरच्छबरस्तस्मात् पुलिन्द वृन्दादनासादितहरिण पिशितः पिशिताशन इव विकृतदर्शनः पिशितार्थी तस्मिन्नेव तरुतले मुहुर्त्तमिव व्यलम्बत।

3. निम्नलिखित श्लोक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

यावदर्थपदां वाचमेवादाय माधवः।
विरराम महीयांस प्रकृत्या मितभाषिणः।।

अथवा

आरभन्तेऽल्पमेवाज्ञाः कामं व्यग्रा भवन्ति च।
महारम्भाः कृतधियस्तिष्ठन्ति च निराकुलाः।।

4. निम्नलिखित श्लोक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

कर्णामृतं सूक्तिरसं विमुच्य
दोषे प्रयत्नः सुमहान्खलानाम्।
निरीक्षते केलिवनं प्रविश्य
क्रमेतकः कण्टकजातमेव।।

अथवा

प्रतापभानौ भजति प्रतिष्ठां
यस्य प्रभातेष्विव संयुगेषु।
सूर्योपलानामिव पार्थिवानां
केषां न तापः प्रकटीबभूव।।

5. निम्नलिखित श्लोक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयोरतद्व्यावृत्त्या चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि।
स कस्य स्तोतवयः कतिविधगुणः कस्य विषयः पदे त्वर्वाचने पतति न मनः कस्य न वचः।।

अथवा

भवः शर्वो रूद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहां–स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम्।
अमुष्मिन्प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि प्रियायास्मै धाम्ने प्रविहितनमस्योऽस्मि भवते।।

6. निम्नलिखित श्लोक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

प्रतिक्षणं सा कृतरोम–विक्रियां
व्रताय मौञ्जीं त्रिगुणां बभार याम्।
अकारि तत्पूर्व–निबद्धया तया।
सरागमस्या रशना गुणास्पदम्।।

अथवा

द्वयं गतं सम्प्रति शोचनीयतां
समागम–प्रार्थनया कपालिनः।
कला च सा कान्तिमती कलावतस्त्वमस्य
लोकस्य च नेत्रकौमुदी।।

7. कादम्बरी में वर्णित जाबालि आश्रम का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
8. 'शिशुपालवधम्' के अनुसार, युद्ध के विषय में श्रीकृष्ण के दृष्टिकोण को प्रस्तुत कीजिए।
9. 'कुमारसम्भवम्' के पञ्चम सर्ग के अनुसार, पार्वती का चरित्र चित्रण कीजिए।

खण्ड–'स' 2×16=32

(दीर्घउत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :– **किन्हीं दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम **500** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न **16** अंक का है।

10. कादम्बरी के आधार पर बाणभट्ट की गद्य शैली की समीक्षा कीजिए।

11. 'शिशुपालवधम्' के द्वितीय सर्ग में वर्णित बलराम श्रीकृष्ण एवं नारण की मंत्रणा को स्वशब्दों में विवेचन कीजिए।

12. 'शिवमहिम्नः स्तोत्र' के आधार पर शिव के स्वरूप का विवेचन कीजिए।

13. 'कुमारसंभवम्' के पञ्चम सर्ग के आधार पर ''उपमा कालिदासस्य'' की समीक्षा कीजिए।